Nai Dunia (Indore), 10th August 2026, *Naidunia City*, Page-I

आइआइटी इंदौर में वक्ताओं ने विकास कार्यों से पर्यावरण पर होने वाले नुकसान पर की चर्चा

पर्यावरण बचाने के लिए विज्ञान व समुदाय की साझेदारी आवश्यक

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर: पर्यावरण को बचाने और विकास को टिकाऊ बनाने के लिए सिर्फ नई तकनीक विकसित करना पर्याप्त नहीं है। वैज्ञानिक नवाचार को पर्यावरण की पारंपरिक समझ और स्थानीय समुदाय की भागीदारी से जोड़ना होगा। यह बात हिमालयन एनवायरनमेंटल स्टडीज एंड कंजर्वेशन आर्गनाइजेशन (एचईएससीओ) के संस्थापक और पद्म भूषण डा. अनिल प्रकाश जोशी ने कहीं।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) इंदौर में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन एनवायरनमेंटल रिसर्च एंड इनोवेशन फार सस्टेनेबल इंजीनियरिंग (एनराइस-2026) आयोजित की गई। सम्मेलन का उद्देश्य पर्यावरण से जुड़ी मौजूदा चुनौतियों और उनके तकनीकी समाधान पर देश-दुनिया के विशेषज्ञों को एक मंच पर लाना था। इसमें भारत के साथ विभिन्न देशों के शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों, इंजीनियरों, विद्यार्थियों और नीति-निर्माताओं ने हिस्सा लिया। विशेषज्ञों ने विकास की रफ्तार बनाए रखते हुए पर्यावरण को होने वाले नुकसान को कैसे कम किया जा सकता है, इस पर अधिक जोर दिया है।

डा. अनिल प्रकाश जोशी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों का तेजी से दोहन और पर्यावरणीय असंतुलन सहित अन्य समस्याएं लगातार गंभीर हो रही हैं। ऐसे में नई तकनीक और वैज्ञानिक शोध को विकसित करना आवश्यक है। कुछ अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय विशेषज्ञों ने आनलाइन और आफलाइन माध्यम से विचार रखे। आइआइटी गुवाहाटी के प्रो. अजय एस. कलामधाद, आइआइटी दिल्ली की प्रो. अनुश्री मलिक, आइआइटी खड़गपुर के प्रो. ब्रजेश दुबे, यूनिवर्सिटी आफ लीड्स की डा. दया पांडे, डलहौजी यूनिवर्सिटी कनाडा के प्रो. सोनिल नंदा, लाइबनिज यूनिवर्सिटी हनोवर (जर्मनी) की प्रो. रेजिना नोगुएरा, यूनिवर्सिटी आफ पेरिस साइट (फ्रांस) के प्रो. एरिक डी. वान हुलेबुश और यूनिवर्सिटी आफ ल्युब्लियाना, स्लोवेनिया की डा. गैब्रिएला कलचिकोवा सहित कई विशेषज्ञ शामिल रहे।

आइआइटी इंदौर में अतिथियों ने पुस्तिका का विमोचन किया। ● सौजन्य संस्थान

शोध पत्र किए प्रस्तुत

सम्मेलन में 250 से अधिक प्रतिनिधियों और 10 से ज्यादा वक्ताओं ने भाग लिया। दो दिनों में कई शोधकर्ताओं ने शोध पत्र भी प्रस्तुत किए। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण, तकनीकी नवाचार और सतत इंजीनियरिंग से जुड़े शोध बताए। 150 से अधिक मौखिक और 50 पोस्टर प्रस्तुतियां दी गईं। पुरस्कार वितरण समारोह में गुजरात जैव प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय गांधीनगर के कुलसचिव डा. जीतेंद्र सी. लिलानी मौजूद रहे। निदेशक डा. सुहास जोशी ने भी सम्मेलन को पर्यावरण और इंजीनियरिंग के बीच सहयोग बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया। सम्मेलन का संयोजन मेहता फैमिली स्कूल आफ सस्टेनेबिलिटी की प्रो. किरण बाला और आइआइटी इंदौर के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के डा. मयूर शिरीष जैन ने किया।